सम्पादकीय

श्री गुरुग्रंथ साहिब-गुरुता गद्दी के 300 साल

भारतीय में मध्यकालीन युग में दशगुरु परंपरा की एक ऐतिहासिक परंपरा प्रारम्भ हुई। इस परंपरा में प्रथम गुरु श्री नानकदेव जी हुए और अंतिम गुरु श्री गोबिंद सिंह जी हुए। इस परंपरा का उद्‌गम स्थान आज के पाकिस्तान में है। इस परंपरा के गुरुअपों ने देश में जनजागृति के लिए और धर्म की रक्षा के लिए देश के चप्पे-चप्पे की यात्रा की । नवम् गुरु श्री तेग बहादुर सुदूर असम तक गए। प्रथम गुरु श्री नानक देव तो सिक्किम से लेकर रामेश्वरम् तक की यात्रा कर आए। दशम् गुरु श्री गोबिन्द सिंह जी का जन्म बिहार प्रदेश में हुआ और उनका देहवसान महाराष्ट्र में हुआ। यह दशगुरु परंपरा अपने संपूर्ण परिप्रेक्ष्य में समग्र देश की परंपरा थी जिसने संपूर्ण देश में अन्याय से लड़ने का और क्षत्रिय तेज जागृत करने का नया जज्बा पैदा किया। श्री नानक देव जी ने अपने समय में विदेशी आक्रांता बाबर को चुनौती दी थी। पंचम गुरु श्री अर्जुन देव जी को जहांगीर की विदेशी सत्ता ने शहीद किया था। नवम् गुरु श्री तेग बहादुर जी और उनके पिता दशम् गुरु श्री गोबिन्द सिंह जी ने अपने वक्त में औरंगजेब की आततायी सत्ता को ललकारा था। गोबिन्द सिंह जी ने तो औरंगजेब को जफरनामा लिखकर भारत की जीत की भविष्यवाणी भी कर दी थी।

इस परंपरा के गुरु उच्च कोटि के साहित्यकार और कवि भी थे। उन द्वारा रचित काव्यवाणी सीधे हृदय को छूती है। लेकिन वह केवल कला-कला के लिए नहीं है बल्कि मनुष्य मात्र को भावी उन्नति का मार्ग दिखाती है। यह मन के विकास का रास्ता है। पंचम गुरु श्री अर्जुन देव जी ने अपने समेत चारों पूर्ववर्ती गुरुओं की वाणी का संकलन किया और उसके साथ ही अन्य पूर्ववर्ती और समकालीन संत व भक्त कवियों की वाणी का संकलन भी किया। यह संकलन कालांतर में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बाद में दशम गुरु गोबिन्द सिंह जी ने इसका पुन: संपादन किया और इसमें अपने पिता जी की वाणी खी जोड़ दी। जब श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी अपने जीवन के अंतिम क्षणों में थे तो उन्होंने अपने बाद किसी अन्य को अपना उत्तराधि कारी घोषित नहीं किया। उनकी मृत्यु के बाद श्री गुरुग्रन्थ साहिब ही गुरु के रूप में स्वीकार किया जाने लगे। आज इस घटना को 300 साल पूरे हो गए हैं। गुरुग्रन्थ साहिब एक प्रकार से आदिकाल से लेकर अब तक संपूर्ण भारतीय चिन्तन का निचोड़ कहा जा सकता है। हर परिस्थिति में, हर संकट में यह आस्थावान को रास्ता दिखाता है। जो संकट में आशा की किरण दिखाए, जो निराशा में गिर रहे व्यक्ति को थाम ले वही वास्तव में गुरु है। गुरुग्रंन्थ साहिब में ये सभी गुण मौजूद है। वैसे भी जिसकी आस्था असंदिग्ध है वह निराश होगा ही क्यों? निराशा और अवसाद तभी आता है जब आस्था और विश्वास सशर्त होता है। गुरुग्रन्थ साहिब ने संपूर्ण भारत के निर्विवाद गुरु के नाते अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी से आंतरिक मार्गदर्शन प्राप्त करके गुरु जी का खालसा अफगानिस्तान तक घुस गया था।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का रास्ता इस लोक ओर उस लोक में समन्वय स्थापित करता है। मोक्ष प्राप्ति के लिए यह पलायनवाद का रास्ता नहीं दिखाता। बल्कि संसार की साधना करते-करते मोक्ष तक पहुंचने का व्यवहारिक रास्ता दिखाता है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसने आभिजात्य भाषा की कैद में चिंतन को जन भाषा में जनसुलभ बनाया। भारत वर्ष ने अपने इस गुरु के मार्गदर्शन में पिछले 300 सालों में गुलामी का कलंक भी धोया है और प्रगति की नई ऊचाईयां भी छूई हैं। एक बार पुन: इस गुरु को कृतज्ञ भारत का नमन।

- डॉ. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री